

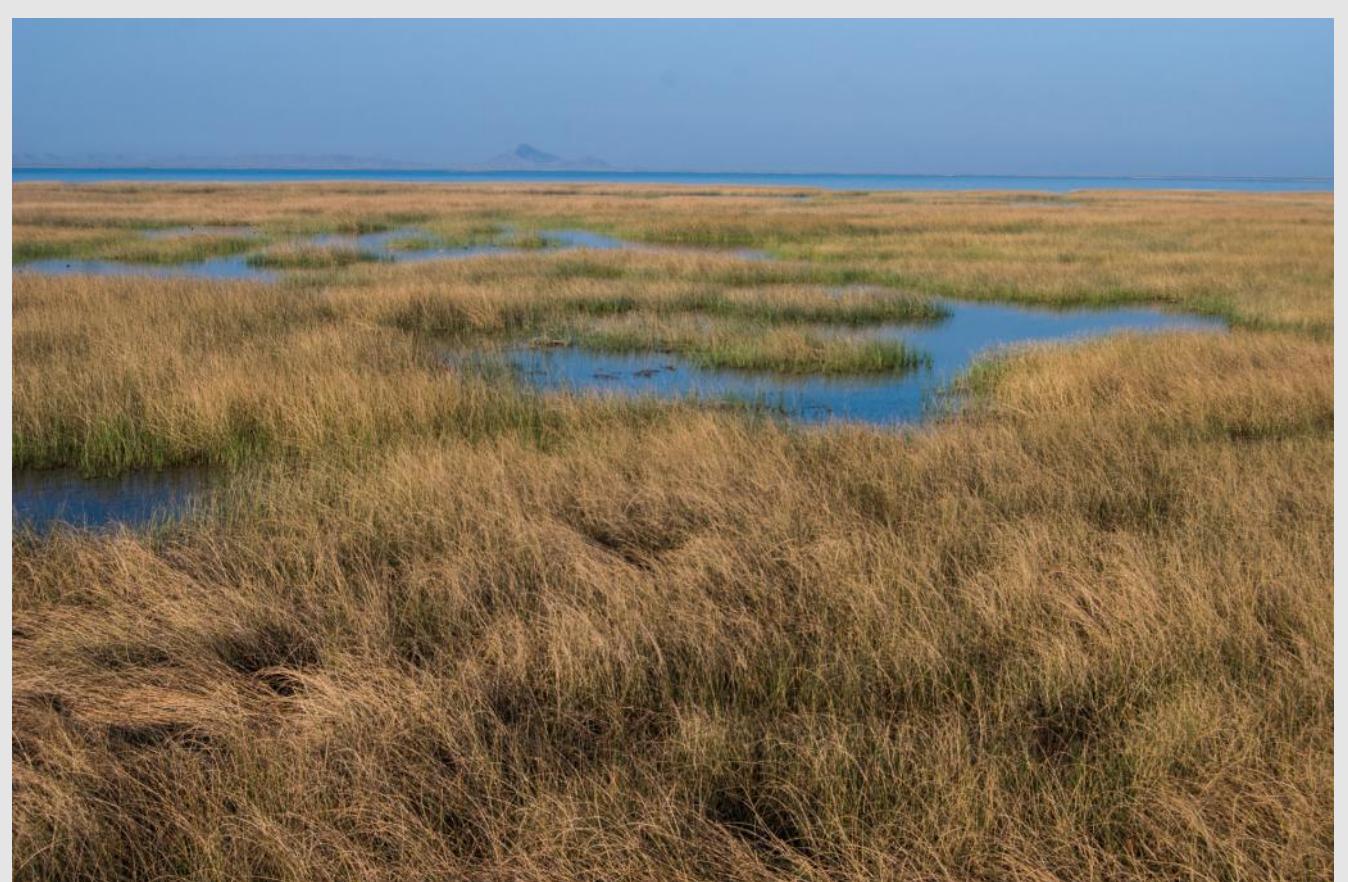
आजीविकाएं



ऊपर : रबारियों और उनके ऊटों का एक रेवड़ प्रवासन के लिए रवाना हो रहा है।

कच्छ में कुछ संगठन चरवाही, संसाधन संरक्षण, वर्षा आधारित खेती और दस्तकारी जैसे एक-दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग दिखाई देने वाले सवालों पर काम कर रहे हैं। उन्होंने इस बात को समझ लिया है कि कुदरत में हर चीज एक साझा डोर से बंधी हुई है।

सहजीवन इन्हीं में से एक संगठन है जो बन्नी इलाके में गुज्जर और रबारी जैसे चरवाहा समुदायों के बीच काम कर रहा है। यह संगठन इन समुदायों के लिए सामुदायिक एवं आवास अधिकार तथा घास भूमि और जल संसाधनों पर अधिकार दिलाने के लिए पैरवी कर रहा है।



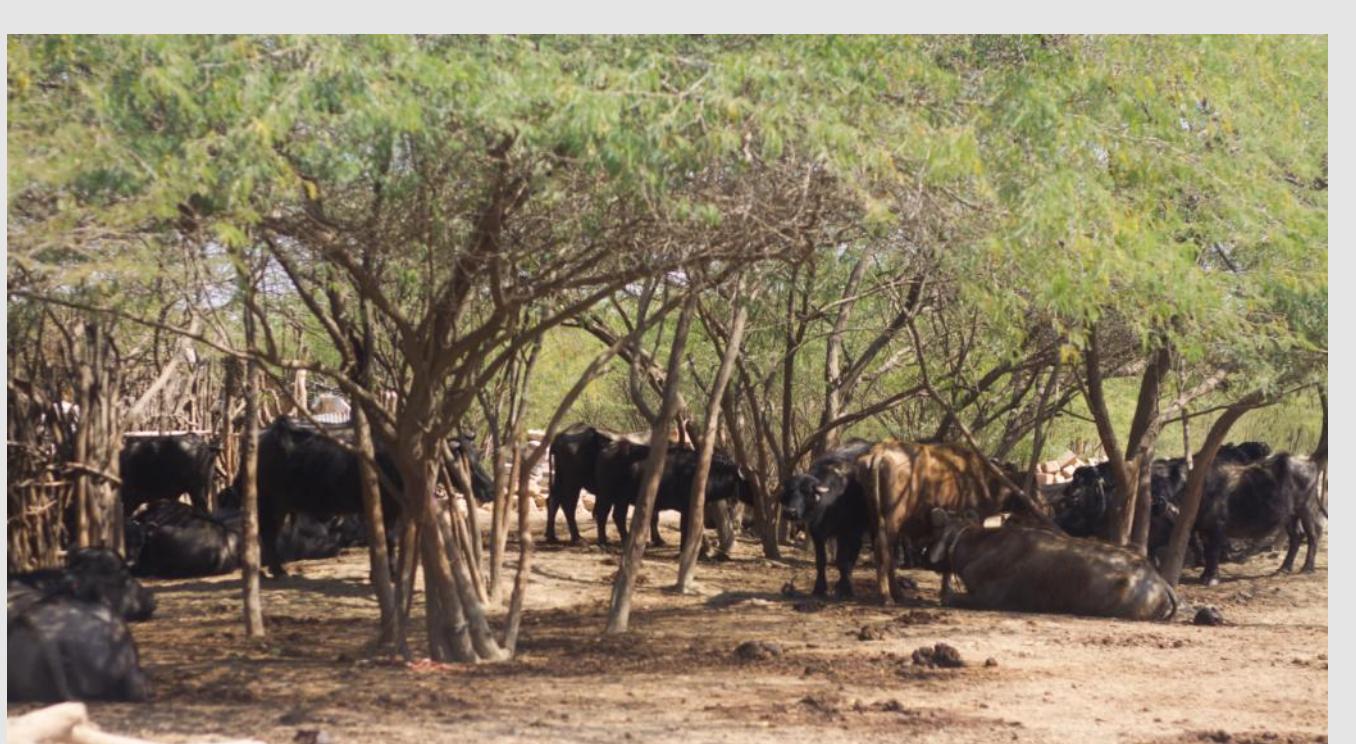
बाएः बन्नी इलाके के खुले मैदान में गुज्जरों की एक सामुदायिक बैठक। इस इलाके के बहुत सारे हिस्से या तो दूसरे इलाकों से यहाँ आयी खरपतवार के कब्जे में जा चुके हैं या खारे हो चुके हैं।

मध्यः सहजीवन चरवाही मैदानों और पानी की कुंडियों को बचाने के लिए संसाधन मैपिंग में मदद दे रहा है।

दाहिनेः चरवाही जमीनें और बाढ़ग्रस्त मैदान अभी भी बचे हुए हैं जहाँ मराल (फ्लेमिंगो) और तिलोर जैसे जंगली जीव-जंतु भी निवास करते हैं।



कच्छ के ही कुछ स्थानों पर सहजीवन की कोशिशों से मवेशियों की कुछ **स्थानीय नस्लें** कायम रह पायी हैं जिससे समुदायों को दूध बेचने और खेती में उपयोग के लिए गाय के गोबर की रीसाइकिलिंग से आमदनी का एक जरिया मिला है। इसमें **सात्विक** नामक संगठन भी उनकी मदद कर रहा है जो जैविक खेती का हिमायती है (देखें चित्र ५)।



बाएः कांकरेज - मवेशियों की एक स्थानीय प्रजाति जो खुद को कच्छ के कठिन वातावरण के अनुसार बाल चुकी है। इन मवेशियों को एक बहुत खास नस्ल के रूप में पहचाना जाने लगा है।

मध्यः लखपत इलाके में रबारियों का एक समूह जो एक डेयरी शुरू होने के फलस्वरूप १६ साल बाद घर लौट रहा है।

दाएः डेयरियों के शुरू हो जाने के कारण एक दुर्भाग्यजनक बदलाव यह आया है कि अब लोग ज्यादा भैंस पालने लगे हैं, जिन्हें दूसरे जानवरों से ज्यादा पानी और चारे की जरूरत होती है।